सम्पादकीय

होला परंपरा, आज के भारत की जरुरत

होली का उत्सव अधर्म और अत्याचार की पराज्य का उत्सव है। हिरण्यकश्यप धर्म का विरोधी था। उसके अत्याचारों से प्रजा त्रस्त थी। उसका अहंकार तो शिखर पर था ही, वह अपने आप को अवसर से भी आगे मानता था। इतिहास साक्षी है कि अत्याचार के भीतर से ही प्रतिकार जन्म लेता है। हिरण्यकश्यप को उसके अपने ही पुत्र प्रह्लाद ने चुनौती दी।

हरिजुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आया राम राजे॥
हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ॥

कहा भी गया है कि जब धर्म की रक्षा का प्रश्न हो तो भी सभी संबंध पीछे रह जाते हैं। प्रह्लाद हिरण्यकश्यप के खिलाफ उठ खडा हुआ। कंस के खिलाफ भी उसी का भांजा कृष्ण उठ खडा हुआ था। परंतु इतिहास में ऐसे अवसर भी आते हैं जब अधर्म धर्म पर भारी पड़ने लगता है। यह इतिहास का ऐसा ही क्षण था । तब नरसिंह का आगमन होता है। नृसिंह के बारे में विशेषता यह है कि उसका जन्म नहीं हुआ बल्कि वह प्रकट हुआ! इसलिए ना वह अंडज है न जेरज। नरसिंह ने हिरण्यकश्यप का अंत कर दिया। जाहिर है यह सभी के लिए प्रसन्नता का अवसर था। एक दूसरे पर रंग डालने का अवसर। होली का महत्व इसलिए भी ज्यादा है कि इसमें धनी, निर्धन, ऊंच, नीच के सभी भेद समाप्त हो जाते हैं। होली सामाजिक समरसता का अनोखा संगम है ।

लेकिन क्या हिरण्यकश्यप के मर जाने से अधर्म का अंत हो जाता है। हिरण्यकश्यप तो हर युग में पैदा होता है। यह हर युग का श्राप है। इसलिए क्या हर युग में हिरण्यकश्यप का अंत करने के लिए नरसिंह की प्रतीक्षा करनी होगी। होली का रंग पर्व हिरण्यकश्यप से बाधित होता ही रहेगा। उसके लिए हर बार नरसिंह कहां से आयेगा। दशम् गुरु गोविंद सिंह जी के आगे भी यहीं प्रश्न था। उनके काल का हिरण्यकश्यप औरंगजेब था। वह भारतीय समाज के होली पर्व को बाधित कर रहा था। सवा मण यज्ञो पवित तोड़कर वह भोजन करता था। उसने नवम गुरु श्री तेग बहादुर का बलिदान ले लिया था। गुरु गोविंद सिंह नरसिंह के आने का इंतजार नहीं कर सकते थे। उन्होंने देश की सामान्य जनता को ही शिक्षित किया। यमराज से भी न भयभीत होने वाली निहंग परंपरा शुरु की। नेजे और तलवार चलाने का प्रशिक्षण दिया। गतका का खेल प्रारम्भ किया । होली के अवसर पर उन् सभी को आनंदपुर में आमंत्रित किया। जिस प्रकार आज कल 26 जनवरी के दिन दिल्ली में शक्ति प्रदर्शन किया जाता है ताकि शत्रु आक्रमण करने की हिम्मत न जुटा सके उसी प्रकार आनंदपुर साहब में होली के दिन यह एक प्रकार से भारत का शक्ति प्रदर्शन था। उससे भारतीय समाज में उत्साह का संचार हुआ। होली के दिन प्रसन्नता से रंग पर्व मनाया जाता था और उससे दूसरे दिन आनंदपुर साहब में आ कर भविष्य में भी उस आनंदपर्व को सुरक्षित रखने का संकल्प लिया जाता था। यह संकल्प शस्त्र के बल पर लिया जाता था। इसलिए होला में शस्त्र प्रदर्शन की परंपरा स्थापित हुई। ऐसा इतिहासकार मानते हैं कि श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज द्वारा स्थापित इन्ही शौर्य परम्पराओं ने अंत में अत्याचारी विदेशी मुगल साम्राज्य के अंत का प्रारम्भ किया। आनंदपुर की होला परंपरा भारत की ऐसी विरासत है जिसको संभालने के साथ-साथ उसका प्रसार करने की जरुरत भी है। क्योंकि आज फिर हिरण्यकश्यप भारत पर घात लगा कर बैठे हैं। होला परंपरा उसी का माकूल उत्तर है ।

- डा. कुलदीप चंद अग्निहोत्री